वित्तीय साक्षरता गाईड

NABARD

NATIONAL BANK FOR AGRICULTURE
AND RURAL DEVELOPMENT

भारतीय रिज़र्व बैंक

ग्रामीण आयोजना और ऋण विभाग,
केन्द्रीय कार्यालय, मुंबई

वित्तीय साक्षरता कैम्प
के लिए
प्रशिक्षक गाइड

(रिजर्व बैंक के दिनांक 06 जून 2012 के परिपत्र ग्राआऋवि. एफएलसी. सं. 12452/12.01.018/2011-12 अनुसार जारी)

इस पुस्तिका की विषय-वस्तु, भारतीय रिजर्व बैंक, ग्रामीण आयोजना और ऋण विभाग द्वारा तैयार की गई है जिसे उपर्युक्त दिशानिर्देशों के अनुसार देश भर के वित्तीय साक्षरता केन्द्रों एवं अनुसूचित वाणिज्यिक बैंकों की सभी ग्रामीण शाखाओं द्वारा मासिक यह गाइड www.rbi.org.in पर भी उपलब्ध है।

लेखक : सुषमा विज और गीता नायर
रेखांकन : आर एन रहाते

प्रथम संस्करण - जनवरी 2013

द्वारा प्रकाशित
भारतीय रिजर्व बैंक
ग्रामीण आयोजना और ऋण विभाग
10वीं मंजिल, केन्द्रीय कार्यालय भवन
शहीद भगत सिंह मार्ग
फोर्ट, मुंबई- 400001

सर्वाधिकार सुरक्षित
पुन: प्रकाशन की अनुमति स्रोत के उल्लेख के साथ ही दी जाती है।

आभार
एसियॉन इंडिया, इंडियन स्कूल ऑफ माइक्रो फाइनेंस फॉर विमेन (आइएसएमडब्ल्यू), परिणम फाउंडेशन, संचयन सोसाइटी तथा सभी स्रोतों से प्राप्त जानकारी के लिए विशेष आभार।

प्राक्कथन

वित्तीय साक्षरता वित्तीय उत्पादों तथा सेवाओं हेतु मांग का सृजन करती है, इससे आम आदमी को बैंकों द्वारा प्रदत्त उत्पादों और सेवाओं की आवश्यकताओं तथा लाभों की जानकारी मिलती है जिसके फलस्वरूप वित्तीय समावेशन की गति बढ़ती है। समाज के सभी वर्गों के लिए किसी न किसी रूप में वित्तीय साक्षरता की जरूरत होती है। तथापि, हमारे समाज का एक बड़ा वर्ग वित्तीय रूप से वंचित रहा है, इसलिए वर्तमान में वित्तीय साक्षरता कार्यक्रमों में मुख्य रूप से ऐसे व्यक्तियों पर ध्यान केंद्रित करना चाहिए जो व्यक्तिगत वित्त से संबंधित मामलों में जानकारी न होने के कारण लगातार वित्त के अभाव में जी रहे हैं। आउटरीच कार्यक्रम के तहत दूरदराज के गांवों की यात्रा में मैंने पाया कि वित्तीय साक्षरता कार्यक्रमों का प्रभाव बढ़ाने में प्राथमिक चुनौती यह है कि लक्ष्य समूहों तक पहुंचाए जानेवाले मानकीकृत बुनियादी पाठ्यक्रम उपलब्ध नहीं हैं। यह गाइड लक्षित वर्गों तक विभिन्न स्त्रोतों से पहुंचने वाले संदेशों में एकरूपता सुनिश्चित करने के लिए तैयार की गई है जिससे वे अधिक केंद्रीत तथा उद्देश्यपूर्ण हो सकें। मुझे विश्वास है कि इससे आम जनता में बैंकिंग सेवाओं की मांग बढ़ जाएगी। यह गाइड बैंकों के ग्रामीण शाखा प्रबंधकों तथा अग्रणी जिला प्रबंधकों द्वारा मासिक वित्तीय साक्षरता कैम्पों में उपयोग के लिए तैयार की गई है। यह गाइड वांछित अनुरूपता के साथ शहरी क्षेत्र में वित्तीय सेवाओं से वंचित विभिन्न वर्गों के लोगों को शिक्षित करने के लिए उपयोग में लाई जा सकती है। बैंकों को चाहिए कि वे वित्तीय साक्षरता कार्यक्रमों के संचालन तंत्र को गतिशील बनाएं और साथ ही साथ ग्राहकों को वहन करने योग्य लागत तथा इस्तेमाल करने में आसान सेवाएं प्राप्त कराएं। अब समय आ गया है कि हम अपने वित्तीय समावेशन मॉडल को एक निरंतर चलने वाले व्यवहार्य व्यावसायिक अवसर के रूप में उन्नत करें ताकि गरीबी से वित्तीय साक्षरता की ओर अग्रसर हो सकें तथा बैंकों को भी सुनिश्चित रूप से लाभप्रद कारोबारी अवसर प्राप्त हों।

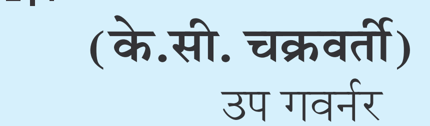

(के.सी. चक्रवर्ती)
उप गवर्नर

विषय -सूची

क्र.सं.	विषय	पृष्ठ सं.
1.	प्रशिक्षकों के लिए मार्गदर्शी टिप्पणी	i - ii
2.	बाह्य वित्तीय साक्षरता कार्यक्रमों का संचालन - परिचालनात्मक दिशानिर्देश	iii -iv
3.	अपने वित्त का प्रबंध करें	1 -6
4.	बचत	7 - 9
5.	बैंकों में बचत	10-10
6.	उधार	17-18
7.	बैंकों से उधार	19 -22

वित्तीय साक्षरता - प्रशिक्षकों के लिए मार्गदर्शी टिप्पणी

1. वित्तीय साक्षरता कार्यक्रमों का उद्देश्य दो अत्यावश्यक अवयवों, साक्षरता एवं सुलभ उपलब्धता के माध्यम से वित्तीय समावेशन को सुविधाजनक बनाना है। इस कार्यक्रम का प्रयोजन आम आदमी को जानकारी प्रदान करना है ताकि वे वित्तीय आयोजना करने, बचत की आदत डालने, एवं वित्तीय उत्पादों के बारे में जानकारी पाने मे सक्षम बन जाए तथा वित्तीय सेवाओं का कारगर ढंग से उपयोग कर सके। वित्तीय साक्षरता उन्हें अपने जीवन चक्र की जरुरतों के लिए समय से पहले नियोजन करने में और ऋण का सहारा लिए बिना ही अनपेक्षित आकस्मिकताओं से निपटने में सहायक होनी चाहिए। उनके लिए अपने धन का सकारात्मक ढंग से प्रबंधन करना तथा ऋण के जाल में फंसने से बचना संभव होना चाहिए। इन कार्यक्रमों के माध्यम से दी जानेवाली जानकारी के परिणामस्वरूप आम आदमी में बैंकिंग सुविधाओं के उपयोग की आदत विकसित हो, इसके लिए, वित्तीय साक्षरता को वित्तीय सेवाओं के साथ उपलब्ध कराना होगा जिससे कि आम लोग वित्तीय मामलों से निपटने की सक्षमता हासिल करने के लिए इस जानकारी को प्रभावी रूप से काम में ला सकें। यह गाइड बैंकिंग सेवाओं का प्रयोग करते हुए उन्हें अपनी आर्थिक सुरक्षा बढ़ा पाने में कारगर सिद्ध होनी चाहिए।

2. वित्तीय सेवा प्रदाता के रूप में बैंकों को वित्तीय समावेशन और वित्तीय साक्षरता के प्रचार-प्रसार से देश के दूर दराज़गांवों में निहित व्यावसायिक अवसर पाने में मदद मिलेगी। छोटे ग्राहक महत्वपूर्ण होते हैं और बैंकों को इनमें उपलब्ध कारोबारी अवसर प्राप्त करने चाहिए। अतः बैंकों को वित्तीय साक्षरता प्रयासों को अपने भावी निवेश के रूप में देखना चाहिए। बैंकों को खाताधारियों को बैंकिंग सेवाओं का समूह उपलब्ध कराना चाहिए जिसमें छोटी ओवरड्राफ्ट सुविधा, भिन्न-भिन्न राशि के आवर्ती जमा खाते, केसीसी तथा धन-प्रेषण सुविधाएं शामिल हो, जिससे कि खाते सक्रीय लेनदेन वाले बन जाएं। लोगों का इन खातो में लेनदेन करने के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए ताकि खाता रखने संबंधी खर्चे की लागत वसूल कर यह बैंकों के लिए एक व्यवहार्य एवं लाभकारी व्यवसाय सिद्ध हो। पर्याप्त ऋण की व्यवस्था केवल ग्राहक के हित में ही नहीं हैं, अपितु बैंकों के भी हित में होती है, क्योंकि अर्जित ब्याज के माध्यम से प्राप्त आमदनी से वित्तीय समावेशन, वाणिज्यिक रूप से लाभप्रद सिद्ध होगा। बैंकों को ऋण अनुदानित

दर पर नहीं वरन् एक प्रतिस्पर्धात्मक यद्यपि गैर शोषक दर पर उपलब्ध कराना चाहिए।

3. खाते खोलने के लिए पहला सोपान है विभिन्न उत्पादों के बारे में जागरूकता पैदा करना और उनकी जानकारी देना तथा ये उत्पाद उन्हें घर पर उपलब्ध कराना। वित्तीय साक्षरता गाइड सुस्पष्ट रूप से आम जनता में धन प्रबंधन, बचत के महत्व, बैंक में बचत के लाभ, बैंकों द्वारा दी जानेवाली अन्य सुविधाओं और बैंक से उधार लेने के लाभों के बारे में जागरूकता पैदा करने तथा उन्हें शिक्षित करने के उद्देश्य से तैयार की गई है। वित्तीय साक्षरता और वित्तीय समावेशन में लगे प्रशिक्षकों के लिए यह गाइड एक रेडी रेकनर है। इसका प्रयोग वित्तीय रूप से वंचित लोगों को इस दिशा में शिक्षित करने के लिए मासिक वित्तीय साक्षरता कैम्प संचालित करने के समय एक मानक पाठ्यक्रम के रूप में किया जाए। उक्त साक्षरता कार्यक्रम करने संबंधी नीति, बैंक सुविधा रहित लोगों को बैंकिंग की परिधि में लाने के उद्देश्य के अनुरूप ही कैम्प स्तर पर खाते खुलवाने और तदनंतर खाते के उपयोग पर बारीकी से निगरानी रखने, की होनी चाहिए। इसके अलावा, खातों के बारंबार प्रयोग में बाधक बनने वाले तत्वों की पहचान करने में अत्यंत बारीकी से समीक्षा उपयोगी होगी। नीति में ऐसे सभी मामलों का निराकरण जल्द से जल्द करने का प्रयास होना चाहिए। साथ ही वित्तीय साक्षरता के कार्यक्रम करते समय स्थानीय सरकारी अधिकारियों और गांव के प्रतिष्ठित व्यक्तियों को शामिल कर लेना अत्यंत वांछनीय है। बैंक वित्तीय साक्षरता के क्षेत्र में सिद्धहस्त एनजीओ को भी साथ लेने पर विचार कर सकते हैं। तथापि, इस गाइड की विषयवस्तु को ही मासिक वित्तीय साक्षरता कैम्प के दौरान वित्तीय रूप से वंचित लोगों को प्रशिक्षण के मानक पाठ्यक्रम के रूप में उपयोग में लाया जाना चाहिए।

❖❖❖

वित्तीय साक्षरता कार्यक्रमों का संचालन
परिचालनात्मक दिशानिर्देश

सभी वित्तीय साक्षरता केंद्र और ग्रामीण शाखाओं को चाहिए कि वे बाह्य साक्षरता कार्यक्रम संचालित करने के लिए वार्षिक कैलेंडर बना लें। हर स्थान पर कार्यक्रम तीन महीनों की अवधि में तीन चरणों में आयोजित किए जाए जिनमें तीन सत्र कम-से-कम दो-दो घंटे के हों । लोगों को स्मार्ट कार्ड समय पर दिए जाते हैं, यह सुनिश्चित करने के लिए दूसरे सत्र के 15 दिन बाद उस स्थान का एक बार दौरा किया जाए। कार्यक्रम के संचालन के लिए उचित परिसर अथवा अन्य स्थान की पहचान पहले ही कर ली जाए। बैंक किसी स्थान विशेष की आवश्यकताओं और उपलब्ध संसाधनों के अनुरूप कार्यक्रम को अनुकूलित (कस्टमाइज़) बना सकते हैं। सभी प्रसंगों पर, कार्यक्रम संचालन का निहित उद्देश्य अधिकाधिक सहभागियों को बैंकिंग की परिधि में लाने का होना चाहिए।

प्रथम सत्र

- ♦ प्रथम सत्र मुख्य रूप से लोगों के बीच वित्तीय अवधारणाओं, निजी वित्त और धन प्रबंधन के बारे में जागरूकता पैदा करने पर केंद्रित होगा। इस प्रयोजन के लिए बैंक को ग्रामीणों के एक समूहों के लिए एक कैम्प आयोजित करना चाहिए। पर्याप्त संख्या में ग्रामीण जनता की कार्यक्रम में उपस्थिति सुनिश्चित करने के लिए गांव में इसका पहले से प्रचार करना चाहिए।
- ♦ कैम्प आयोजित करने संबंधी कार्य पहले से कर लेने चाहिए जैसे कि क्षेत्र के प्रतिष्ठित व्यक्तियों की सहभागिता जैसे गांव का सरपंच, स्कूल के शिक्षक अथवा ग्रामीणों के साथ अच्छा संपर्क रखनेवाला अन्य कोई व्यक्ति। कार्यक्रम के लिए नियोजित स्थल पर उचित व्यवस्थाएं कर लेनी चाहिए। सहभागियों के आने से पहले ही चार्ट लगा लेने चाहिए।
- ♦ सहभागियों के नाम, आयु, व्यवसाय आदि ब्यौरे के साथ सूची बना ली जाए।
- ♦ शामिल विषय निम्नप्रकार हो - वित्तीय आयोजना,बजट बनाना, बचत, वित्तीय डायरी कैसे लिखी जाए, बैंक में बचत जमा करने के लाभ, कारोबार प्रतिनिधि (बीसी), उधार के औपचारिक एवं अनौपचारिक स्त्रोतों में अंतर, उधार के प्रयोजन तथा लागत, विभिन्न प्रकार के उधार आदि, जैसा कि गाइड में बताया गया है।
- ♦ प्रत्येक सहभागी को वित्तीय डायरी वितरित करें। बजट तैयार करने के और आवधिक लेखे (एकाउंट) रखने के लिए किस प्रकार वित्तीय डायरी का प्रयोग

किया जाए इसके बारे में समझाएं। डायरी लिखने के लाभों को दोहराया जाए। अपना बजट बनाने और एक महीने की आमदनी और खर्च लिखने के लिए डायरी का घर पर उपयोग करने के लिए उनसे कहा जाए। उनसे कहा जाए कि वे अगले सत्र में आते समय डायरी जरूर लाएं।

- प्रथम सत्र के अंत में दूसरे सत्र की तारीख घोषित करें और गांववालों को कारोबार प्रतिनिधि (बीसी) के बारे में बता दिया जाए कि दूसरे सत्र में उन्हें इनका परिचय कराया जाएगा। गांववालों को यह तथ्य बता दिया जाए कि उनके खाते कारोबार प्रतिनिधि के माध्यम से खोले जाएंगे। गांववालों को खाता खोलने के लिए आवश्यक दस्तावेजों की जानकारी दी जानी चाहिए और उनसे कहा जाए कि वे दस्तावेज अगले सत्र में आते समय अपने साथ ले आएं। सभी सहभागियों को दूसरे सत्र में अवश्य उपस्थित रहने की स्पष्ट सूचना दी जाए।
- गांव की पंचायत या सरपंच कार्यालय अथवा स्कूल जैसे एक उचित जगह में सभी चार्ट स्थायी पठन हेतु लगा दिए जाएं।

दूसरा सत्र (पहला सत्र करने के दो सप्ताह बाद)

- उपस्थिति दर्ज करा ली जाए। यदि कोई सहभागी अनुपस्थित हो तो उनके बारे में पूछताछ कर कारण का पता लगाएं। गांव वालों को कारोबार प्रतिनिधि का परिचय करा दें और बीसी के बैंक के साथ संबंध, बीसी के माध्यम से कार्य करने के लाभ, जमाराशि के ब्यौरे और ऋण उत्पाद एवं बीसी के माध्यम से उपलब्ध होने वाली अन्य सेवाओं के बारे में उन्हें विस्तार से जानकारी दें।

  सहभागियों को आइसीटी मशीन के परिचालन का प्रदर्शन करें तथा मशीन के माध्यम से प्रत्येक सुविधा का इस्तेमाल करने की जानकारी दी जाए अर्थात् जमा करने/आहरण करने आदि कार्य करते समय यह किस प्रकार चलती है यह दिखाया जाए।
- उनकी वित्तीय डायरी जांच लें और डायरी लिखने में क्या उन्हें कोई कठिनाई हो रही है, इसका पता लगा लें। यदि कोई सुधार आवश्यक हो तो वह बताएं । हर महीने डायरी में नियमित रूप से लिखने का उनसे आग्रह करें।
- खाते की विशेषताएं स्पष्ट करके बताएं जैसे एक महीने में कितनी बार राशि जमा की जा सकती है / निकाली जा सकती है, जमा / राशि निकालने पर सीमा,यदि कोई हो, लागू प्रभारों की राशि, सामाजिक लाभों को सीधे खाते में जमा करने संबंधी कार्य पद्धति, धन प्रेषणों के प्रकार जो खाते के माध्यम से किए जा सकते हैं।

- खाता खोलने संबंधी नामसूची बनाना प्रारंभ करें।
- नामसूची बनाने के बाद उन्हें खाता खोलने में लगभग कितना समय लगेगा उसके बारे में बताएं और यह भी बताएं कि खाते में लेनदेन करने के लिए उन्हें कार्ड मिल जाएंगे। उन्हें बता दें कि कार्ड मिलने के तुरंत बाद वे अपनी दिन प्रतिदिन की जरूरतों के लिए खाते का उपयोग प्रारंभ कर दें।
- *दूसरे सत्र के 15 दिन बाद शाखा के अधिकारी गांववालों को कार्ड सौंपा जाना सुनिश्चित करने के लिए उस गांव का दौरा करें। वे इस बात से भी आश्वस्त हो जाएं कि बीसी ने परिचालन कार्य शुरूकर दिया है और गांव के लोग लेनदेन करने में समर्थ हो गए हैं।*

तीसरा सत्र (दूसरा सत्र चलाने के दो महीने बाद)

- पिछले सत्र के दौरान गांव के जिन लोगों ने खाता खोलने के लिए नाम दर्ज कराया था उनके साथ एक बैठक कर लें। गांववालों तथा बीसी के साथ बातचीत करें।
- खाते में लेनदेन करने में अथवा आइसीटी आधारित प्रणाली का उपयोग करने में हुई कठिनाई के बारे में उनसे पूछे और इसमें सुधार करने की दृष्टि से उनसे सुझाव मांगे।
- खाते के उपयोग की समीक्षा करें ताकि खाते का प्रयोग करने में बाधक कोई मामला हो तो उसका पता चले।

इसके बाद एक नियमित रिपोर्टिंग प्रणाली के माध्यम से लेन-देन स्तरों के बारे में अनुवर्ती कार्रवाई करें।

❖❖❖

अपने वित्त का प्रबंध करें

आमदनी क्या है?

विभिन्न स्त्रोतों, जैसे मज़दूरी, खेती या कारोबार आदि से अर्जित धन आपकी आमदनी कहलाती है।

आमदनी (धन का स्त्रोत)	राशि (₹)
वेतन या मज़दूरी	2000
कृषि/कारोबार से अर्जन	3000
जोड़	5000

खर्चे क्या है ?

विभिन्न मदों पर व्यय किया जानेवाला धन खर्चे कहलाता है। आवश्यक तथा अनावश्यक मदों पर किए जानेवाले खर्चे इसमें आते हैं।

खर्चे (धन का उपयोग)	राशि (₹)
भोजन, मकान, कपड़े	2000
शिक्षा	1000
कर्ज की चुकौती	700
बीमारी	300
शराब, ड्रग्ज, गुटखा	500
जुआ	400
शादी, त्यौहार, तीर्थयात्रा आदि पर अधिक खर्चा	1100
जोड़	6000

आपके पैसे, खर्च हुए कैसे

निवेश क्या है?

अपनी बचत में से कुछ पैसे कहीं पर इस उम्मीद के साथ रखना कि समय अंतराल में इनमें वृद्धि होगी, निवेश कहलाता है। उदाहरण के लिए जमीन खरीदना, मकान खरीदना, बैंक में सावधि जमा रखना आदि।

बचत क्या है?

जब हमारी आमदनी खर्चों के मुकाबले ज्यादा हो तो हमारे पास बचे पैसे बचत कहलाते हैं।

ऋण क्या है?

जब खर्च आमदनी के मुकाबले अधिक हो और हमारे पास कोई बचत भी न हो तो धन की कमी को उधार लेकर अथवा ऋण द्वारा पूरा किया जाता है।

आमदनी	खर्च	परिणाम	क्या करें
₹ 5000	₹ 4000	बचत ₹1000	आगे बढ़े
₹ 5000	₹ 5000	0	सोचें
₹ 5000	₹ 6000	कमी ₹1000	रुकें

ऋण का प्रबंध कैसे करें?

यदि किसी विशिष्ट महीने में हमारे खर्चे आय से अधिक हो, तो पैसे की कमी को पूरा करने के लिए पिछले महीने की बचत का उपयोग किया जा सकता है। यदि हमारे पास कोई बचत न हो तो हमें उधार लेना पड़ेगा

तथा महंगा कर्जा उठाना पड़ेगा। यह हमारे रोजमर्रा के जीवन में पानी के उपयोग के समान है। कभी-कभी नगरपालिका का पानी दिन भर रहता है और कभी वह बिल्कुल आता ही नहीं है। ऐसे में क्या हम पानी का प्रयोग बंद कर देते हैं? नहीं। हम पानी का उपयोग किए बिना नहीं रहते हैं, बल्कि जब अधिक मात्रा में पानी हो तो उस समय पानी को भरकर रख लेते हैं और उसे उस समय काम में लाते हैं जब उसकी कमी रहती है। यही है बचत। हमारा पैसा एक एसे घड़े के समान है जिसके नीचे नल लगा हुआ हैं। घड़े में भरा जानेवाला पानी मानो हमारी आमदनी है और घड़े में से बहता पानी है हमारे खर्चे।

गैर जरूरी खर्चे रोको, पैसा बचाओ, बैंक मे जोड़ो

खर्चों की जरूरी और गैरजरूरी मदों में क्या अंतर है?

जरूरी मदें हैं बुनियादी जरूरतें। इसलिए इनके खर्च को टाला नहीं जा सकता है जैसे भोजन, आवास, कपड़े, बच्चों की शिक्षा, स्वास्थ्य, आदि। गैर जरूरी मदें हैं अपनी चाहतवाली मदें। हम इन्हें इसलिए चाहते हैं कि या तो हमें वे पसंद होती हैं अथवा उनसे हमें आनंद मिलता है परंतु वे जीवित रहने के लिए आवश्यक नहीं होती हैं।

अपने पैसों का प्रबंधन हम कैसे करें?

हम अपने धन का प्रबंधन वित्तीय योजना करते हुए कारगर ढ़ंग से कर सकते हैं । वित्तीय योजना के लिए सर्व प्रथम हमें एक निश्चित अवधि जैसे कि एक सप्ताह या माह के लिए आमदनी और व्यय का हिसाब रखने के लिए एक वित्तीय डायरी रखनी होगी।

वित्तीय योजना (प्लानिंग) क्या है?

वित्तीय योजना का अभिप्राय जीवन चक्र की जरूरतें जैसे जन्म, शिक्षा, मकान खरीदना, विवाह, बीमारी, दुर्घटना, मृत्यु, बाढ़, सूखा जैसी प्राकृतिक आपदाओं पर होनेवाले वित्तीय खर्च का अनुमान लगाने तथा उन्हें पूरा करने के उपाय करने से है।

हमें वित्तीय योजना क्यों करनी चाहिए?

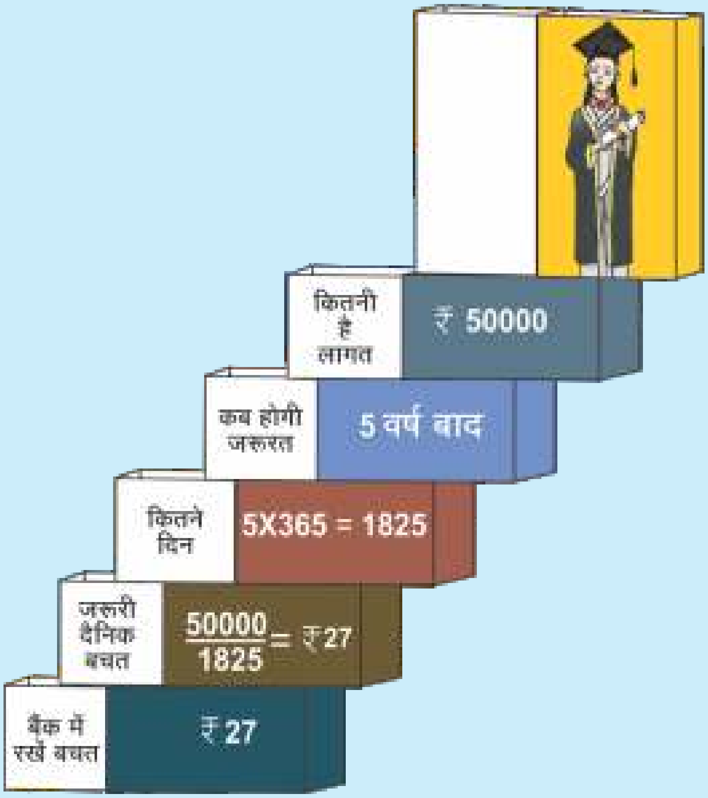

वित्तीय योजना से हम अपने आय स्तर को देखते हुए भावी खर्चें पूरा करने के लिए योजना बनाने में सक्षम होंगे। इससे आपको दोहरा लाभ मिलता है, एक -भविष्य की जरूरतों के लिए पैसे बचाने की दृष्टि से हम गैर जरूरी मदों के खर्चे घटा सकेंगे तथा दूसरा - भविष्य की जरूरतों को पूरा कर पाने के लिए नियमित रूप से अपनी आय में से कुछ हिस्सा बचाकर रख सकेंगे। तो आइए आज ही हम वित्तीय योजना बनाने की शुरूआत करते हैं ताकि हम ऋण की चुकौती बेहतर ढ़ंग से कर पाएं तथा इतनी बचत कर सके कि एक मकान खरीदने या उच्च शिक्षा के लिए खुद की बचत से पैसे जुटा पाएं। **पैसा चाहिए कब और कितना, योजना बनाकर लक्ष्य है जीतना**

वित्तीय योजना कैसे करें?

- अपनी वर्तमान वित्तीय स्थिति (क्या है आज की स्थिति) का आकलन करें।
- अपनी आवश्यकताओं और चाहत की पहचान करें - (हम अल्प अवधि (1 वर्ष) मध्यम अवधि (1-5 वर्ष) और लंबी अवधि (5 वर्ष से अधिक) में क्या हासिल करना चाहते हैं)।
- प्रत्येक मद की लागत और हम इसे कब तक हासिल करना चाहते हैं उसका अनुमान लगाएं। हमें प्रत्येक सप्ताह,माह में कितना पैसा बचाने की जरूरत है इसका हिसाब लगाएं।
- एक वित्तीय डायरी बनाएं - इसमें अपने साप्ताहिक/मासिक आमदनी और व्यय लिखें।

- खर्च को काबू में लाए - समझदारी से खर्चा करें।
- अपनी बचत की नियमित रूप से समीक्षा करें-देखें कि क्या यह प्लानिंग के अनुरूप है? यदि नहीं तो अपने खर्च पर गौर करें कि कहां खर्च में कटौती की जा सकती है और बचत बढ़ाई जा सकती है।
- प्रत्येक सप्ताह/माह के अंत में बचाई गई राशि का हिसाब रखें।
- बैंक खाते में अपनी बचत को जमा करें।

एक वित्तीय डायरी क्यों रखनी है ?

वित्तीय डायरी वित्तीय योजना बनाने में सहायक होती है। किसी महीने के दौरान जरूरी और गैर जरूरी मदों पर कितना पैसा खर्च हो रहा है इसका पता करने में वित्तीय डायरी सहायक होती है। इससे हमें उन मदों का पता चलता है जिन पर खर्च से बचा जा सकता है या कम किया जा सकता है। एक बार पता चलने पर हम इन खर्चों पर नज़र रख सकते हैं। हम पैसे बचा सकते हैं तथा गरीबी से छुटकारा पा सकते हैं।

सोच समझकर, खर्च करें

उदाहरण के लिए मानिए हमारी औसत मासिक आमदनी ₹ 5000 है। वित्तीय डायरी रखने से हमें पता चलता है कि भोजन, मकान और कपड़े पर (₹ 2000), बच्चों की शिक्षा के लिए (₹ 1000) किराया (₹ 700), बीमारी के लिए (₹ 300) त्यौहारों और तीर्थयात्रा जैसी चाहतों पर (₹ 500) और शराब एवं जुआ आदि पर (₹ 500) खर्च हुए हैं। हम त्यौहारों और तीर्थयात्रा पर खर्च घटाकर ₹ 200 कर सकते हैं और शराब एवं जुआ पर खर्च को टाल ही सकते हैं। तो हमने अब₹ 800 की बचत की। इस प्रकार वित्तीय डायरी रखने से हमने बचत जुटा ली। वित्तीय डायरी के बगैर हम खर्चों की समीक्षा नहीं कर सकेंगे और जो भी राशि हमारे हाथ में है, हम सब खर्च कर देंगे।

हम खर्चे कैसे घटाएं ?

हम सूझ-बूझ के साथ अपने खर्चे करते हुए कुछ गैर जरूरी मदों पर खर्च को कम कर सकते हैं। यह बचाया गया पैसा बिना कोई अतिरिक्त धन कमाएं हमारी अतिरिक्त आमदनी है जो आवश्यक वस्तुओं पर खर्च की जा सकेगी। इसे समझना बहुत आसान है।

उदाहरण के लिए, यदि हम रोज 4 कप चाय पीते हो तो पिछले 30 दिनों (एक महीना) में हमने 120 कप चाय का सेवन किया। मान लें कि एक कप चाय ₹ 5 में मिलती हैं तो हमारा कुल खर्चा ₹ 600 हुआ। जरा सोचो कि क्या रोज़ चार कप चाय पीना हमारे लिए जरूरी है? यदि हम रोज दो ही कप चाय पीते तो यह खर्चा ₹ 300 पर आ जाता था और हमारे पास उतने ही रूपए बच जाते। यहां चार कप चाय हुई आपकी इच्छा परंतु मूलतः हमारी जरूरत दो कप चाय ही है। तो एक प्रकार से हमारी आमदनी ₹ 300 प्रति माह बढ़ी तथा हमने एक वर्ष में ₹ 3600 बचाए।

खर्च घटाया तो हुआ चमत्कार,
खुद के पैसे से किया कारोबार

❖❖❖

बचत

हम बचत क्यों करें?

हमें नियमित रूप से बचत करनी चाहिए ताकि अपनी आमदनी से खर्चे ज्यादा हो जाने की स्थितियों में तथा अधिक पैसों की जरूरत पड़ जाने पर हम उसे काम में ले सकें।

- ♦ जन्म, शिक्षा, शादी, खेती के लिए बीज की खरीद, अपना खुद का मकान खरीदने आदि के बड़े-बड़े खर्चे पूरे करने के लिए।
- ♦ बीमारी, दुर्घटना, मृत्यु, प्राकृतिक आपदा में अप्रत्याशित खर्चों को पूरा करने के लिए। ऐसी आपात् कालीन स्थिति में बचत काफ़ी काम आती है।
- ♦ बिना काम के समय अर्थात् हम जब कमा नहीं पाते हैं तब धन की आवश्यकता पड़ती है ।
- ♦ अपनी वृद्धावस्था के लिए पैसे जरूरी है।
- ♦ ऐसी कोई चीज खरीदने के लिए हमें पैसों की जरूरत पड़ती है जो नियमित आमदनी से खरीदी नहीं जा सकती।

संक्षेप में यदि हमें अपनी आमदनी से अधिक खर्च करना पड़े तो हम अपनी बचत से ही उन्हें पूरा कर सकते हैं।

हम बचत कैसे करें ?

हम या तो खर्च में कटौती करके अथवा कमाई बढ़ाकर बचत जुटा पाते हैं। मान लेते हैं कि आमदनी हमारी उतनी ही है । हम जरूरी या गैर जरूरी मदों पर पैसा खर्च करते हैं। शराब, ड्रग्ज, गुटका और जुआ जैसी मदों पर खर्च से बचा जा सकता है जबकि शादी-ब्याह, त्यौहार, तीर्थ-यात्राओं पर होनेवाले अत्यधिक खर्च को कम किया जा सकता

है तथा टीवी, स्कूटर, कार, आभूषण आदि, पर खर्चे स्थगित किए जा सकते हैं। जैसे-जैसे हम गैर जरूरी वस्तुओं पर कम खर्चा करते हैं, जरूरी वस्तुओं के लिए पैसे बचाने में हम सक्षम हो जाते हैं।

हम बचत कैसे करें जबकि हमारे पास नियमित खर्चों को पूरा करने के लिए भी पर्याप्त पैसा नहीं है?

आम धारणा है कि हम पर्याप्त धन नहीं कमाते इसलिए हम बचत नहीं कर सकते। सच्चाई यह है कि हर एक को बचत के आवश्यकता है एवं हर कोई बचत कर सकता है। जीवन में अपनी कमाई के पहले दिन से ही बचत के रूप में अपनी आमदनी का एक हिस्सा बचाकर अलग रखना चाहिए। महत्वपूर्ण यह है कि हम अपने जीवन में शुरूसे ही और नियमित रूप से बचत करना शुरूकर दें, भले ही वह एक छोटी राशि ही क्यों न हो। हमें अचानक ही कोई लाभ /आमदनी होने पर इसे पूर्णतः अथवा इसके अधिकांश भाग की बचत करनी चाहिए। इससे हमारी भविष्य की वित्तीय जरूरतें पूरी करने की चिंता मिट जाएगी और हम अनपेक्षित खर्चों के लिए तैयार रहेंगे।

यदि हम ₹100 कमाते हैं तो हम ₹ 20 बचाएं और अगर हम ₹10 कमाते हैं तो हम ₹ 2 की बचत करें। यदि कमाए हुए ₹ 100 में से ₹ 20 हम अलग रखते हैं तो 5 कमाई दिनों में हम एक दिन की कमाई बचा लेंगे। क्या यह अच्छा नहीं है? मतलब यह हुआ है की 100 दिनों की कमाई में हमने 20 दिनों की कमाई के बराबर की बचत ऊपर से ब्याज भी कमाया। है न यह अद्भुत !!!

दैनिक आय	₹ 100
दैनिक व्यय	₹ 80
दैनिक बचत	₹ 20
माह में बचत	20 x 30 = ₹ 600
वर्ष में बचत	600x12 = ₹ 7200
8 प्रतिशत की दर पर वार्षिक ब्याज	₹ 318
वर्ष के अंत में बचत	₹ 7518
यह राशि 75 दिनों की आय के समकक्ष है।	

हमें कितने समय तक बचत करनी चाहिए?

आयु	25 वर्ष	35 वर्ष	45 वर्ष
वार्षिक बचत (₹)	1000	1000	1000
कितने वर्ष बचत	40	30	20
हमारी बचत की राशि (₹)	40000	30000	20000
प्रति वर्ष 10% की दर से अर्जित ब्याज (₹)	422878	142033	39900
65 वर्ष की आयु में कुल राशि	462878	172033	59900

जितनी अधिक अवधि तक हम पैसा बचाएंगे उतनी ही हमारी बचत बढ़ती जाएगी। जितनी अधिक हमारी बचत होगी उतने ही हम अपने अचानक आनेवाले खर्चों एवं बुढ़ापे की जरूरतों को पूरा करने के लिए तैयार रहेंगे तथा हमें इन जरूरतों को पूरा करने के लिए दूसरों पर निर्भर नहीं रहना पड़ेगा। जैसे-जैसे हमारी बचत बढ़ती जाएगी हमें अपनी जरूरतें पूरी करने के लिए उधार नहीं लेना पड़ेगा। जब हम लंबी अवधि तक बचत करते हैं तब वह कई गुना बढ़ जाती है क्योंकि उस पर ब्याज भी मिलता रहता है।

❖❖❖

बैंकों में बचत

कहां रखे बचत को?

हम अपनी बचत राशि शायद तकिए के नीचे या गुल्लक में रखते होंगे। परंतु होता क्या है? हमेशा उसकी सुरक्षा के बारे में हमें चिंता लगी रहती है। कहीं कोई चूहा या दीमक हमारी मेहनत की कमाई न खा जाए। कोई उसे चुरा तो न लें । या हमें उन पैसों को खर्च करने की इच्छा होजाए या दूसरे लोग हमसे उधार में मांग लें। इसके अतिरिक्त बचत घर में रखने से उसमें बढ़ोतरी नहीं होती है। बचत करने का सर्वोत्तम तरीका है धन को किसी बैंक खाते में जमा करा देना। जहां छोटी राशियां गुल्लक में रखी जा सकती हैं, वहीं अपनी बचत को बैंक में रखना बुद्धिमानी का काम है।

मेहनत की कमाई को ना गंवाएं, बैंक में ही जमा कराएं

बैंक में बचत क्यों रखे?

बैंक में रखा गया धन सुरक्षित होता है क्योंकि बैंक नियमों के अंतर्गत कार्य करते हैं और वे इन बचतों को राष्ट्र-निर्माण के कार्य हेतु इकट्ठा करते हैं। सुरक्षा के अलावा, बैंक हमारे धन को जमा रखने के पैसे नहीं लेते हैं। वास्तव में, वे हमारी जमाराशियों पर ब्याज देते हैं। बैंक में अपना पैसा रखने से हम इसे जब चाहे काम में ला सकते है। बैंकों के साथ किए जानेवाले लेनदेन पारदर्शी होते हैं। बैंक बहुत सी दूसरी उपयोगी सेवाएं भी देते हैं। हम कई सुविधाएं जैसे ऋण और धन प्रेषण सुविधा बैंक से एक उचित लागत पर पा सकते है। हम अपनी मृत्यु के बाद पैसे के लिए दावा करने हेतु किसी व्यक्ति को नामांकित भी कर सकते हैं।

नामांकन क्या है?

नामांकन एक ऐसी सुविधा है जिसमें जमाखाता धारी अपनी मृत्यु हो जाने की अवस्था में बैंक खाते में जमा राशि का दावा करने के लिए किसी व्यक्ति को नामित कर पाता है।

यह सदा वांछनीय है कि बैंक खाते के लिए एक नामांकन कर लेना चाहिए ताकि नामित व्यक्ति को राशि सुलभता से प्राप्त हो सके।

बैंक में खाता खोलने से क्या फायदें होते है?

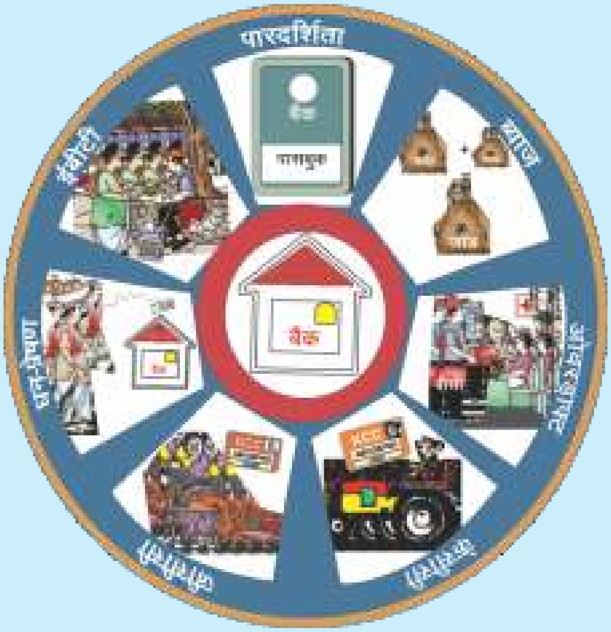

- बैंक खाते से हमें पहचान मिलती है जो की अन्य सरकारी एजेंसियों द्वारा मान्य है।
- बैंक खाते में होनेवाले सभी लेनेदेने पारदर्शी होते हैं, जैसे कि हमें जमा, निकासी, ब्याज आदि संबंधी विवरणों की जानकारी रहती है।
- बैंक पक्षपात रहित होते हैं; समान प्रकार के ग्राहकों के लिए उनके नियम समान होते हैं।
- बैंक खाते में हमारा पैसा सुरक्षित रहता है।
- बैंक हमारी जरूरत के अनुसार बचत, आवर्ती और सावधि जमा खाते खोलता है और जमाराशियों पर ब्याज देता है।
- हम बैंक खाते में अपनी मजदूरी/वेतन सीधे जमा करवा सकते हैं।
- हम मनरेगा मजदूरी, पेंशन आदि जैसे सभी सामाजिक लाभ ईबीटी के माध्यम से सीधे बैंक खाते में जमा करवा सकते हैं।
- हम कभी भी अपना पैसा बैंक में जमा कर सकते हैं अथवा जरूरत पड़ने पर निकाल सकते हैं।
- हम बैंक से ऋण ले सकते हैं। बैंक उचित ब्याज दर पर उत्पादक प्रयोजनों के लिए ऋण देते हैं। हमारा बैंक खाता होने पर ऋण मंजूर करना आसान हो जाता है।
- हम बैंक के माध्यम से धन दूसरी जगह भेज भी सकते हैं।

बचत खाता खोलो एक, बैंक की सेवाएं पाओ अनेक

ईबीटी क्या है?

ईबीटी अर्थात् इलेक्ट्रानिक बेनीफिट ट्रांसफर जो मनरेगा की मजदूरी, वृद्धावस्था पेंशन, विधवाओं के पेंशन,एलपीजी की सब्सिडी के बदले नकदी ट्रांसफर आदि जैसे सामाजिक सुरक्षा लाभ जमा करने के लिए होता है। आपको देय राशि समय पर आपके बैंक खाते में जमा हो जाती है वह भी किसी दूसरे की मध्यस्थता के बिना ही। इस प्रकार, इसमें वर्तमान की मैनुअल (दस्ती) प्रणाली में होनेवाले विलंब तथा पैसा इधर-उधर होने से बचा जा सकता है। हम जब भी चाहे तब अपने बैंक खाते से पैसे निकाल सकते हैं। साथ ही हम बैंक से अन्य सुविधाएं भी पा सकते हैं।

धन-प्रेषण (रेमिटैंस) क्या है ?

हम देश भर में दूरवर्ती स्थानों पर रहनेवाले लोगों को बैंक के माध्यम से पैसे भेज सकते हैं। बैंक हमारे पैसे एक स्थान से दूसरे स्थान पर अथवा एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति को सुरक्षित रूप में, कम समय में और कारगर ढंग से भेज देते हैं।

इस प्रकार आपके पास यदि बैंक खाता हो तो हम पैसे आसानी से दूसरे शहर में पढ़ रहे अपने बच्चे के खाते में जमा करवा सकते हैं। हम अपने बैंक खाते में दूरवर्ती स्थान पर रहनेवाले अपने रिश्तेदारों से भी पैसे प्राप्त कर सकते हैं।

ब्याज क्या है?

ब्याज वह राशि है जो हम अपनी बचत पर अर्जित करते है अथवा जो उधार लेने पर हमें उधार की राशि के अलावा चुकानी पड़ती है। बैंक में हमारे द्वारा रखी गई राशि वैसे ही पड़ी नहीं रह जाती है। बैंक यह पैसा दूसरे लोगों को उधार देते हैं। जो लोग बैंक से पैसा उधार लेते हैं वे कुछ ब्याज अदा करते हैं।

उदाहरण के लिए हम एक बैंक में ₹1000 जमा करते हैं। बैंक किसी अन्य व्यक्ति को यह राशि उधार में देता है। एक वर्ष के अंत में वह व्यक्ति बैंक को प्रभार के रूप में ₹100 का भुगतान करता है। बैंक इसमें से एक हिस्सा हमें दे देता है जैसे कि ₹ 40। हमें एक वर्ष के लिए बैंक में ₹1000 रखने के लिए जो अतिरिक्त आमदनी हुई उसे ब्याज कहते हैं।

साहूकारों द्वारा वसूला जानेवाला ब्याज भी 3 से 5 प्रतिशत होता है फिर यह कैसे संभव है कि हम उन्हें बैंकों के मुकाबले अधिक ब्याज अदा करते हैं?

बैंकों द्वारा अधिसूचित ब्याज दर वार्षिक आधार पर होती है जबकि साहूकार हर महीने के लिए ब्याज दर लेते हैं। इसलिए यदि साहूकार की ब्याज दर 3 प्रतिशत है तो उसका अर्थ है वर्ष के लिए 36 प्रतिशत ब्याज देना होगा (3X12) जबकि यदि बैंक 12 प्रतिशत की ब्याज दर बताते हैं तो उसका अर्थ है एक वर्ष के लिए 12 प्रतिशत का ब्याज। इस प्रकार, बैंकों की ब्याज दर साहूकारों की ब्याज दरों से कम होती है तथा साहूकारों को हम बहुत बड़ी ब्याज दर चुकाते हैं।

जमा खातों के भिन्न प्रकार कौन से हैं?

बैंक तीन प्रकार के जमा खातों की सुविधा देते हैं। बचत जमा, मीयादी जमा और आवर्ती जमा।

- **बचत जमा खाता** हमारी प्रतिदिन की बची राशि जमा करने के लिए होते हैं। जब भी जरूरत हो हम इसमें से पैसा निकाल सकते हैं। अपने बचत खाते में हमें ओवरड्राफ्ट (आपातकाल के लिए ऋण) भी मिल सकता है।
- **मीयादी जमा खाता** एक निश्चित अवधि के लिए हमारा पैसा जमा रखने के लिए होता है जो हमारी जरूरतों के अनुसार हो। इसमें बचत खाते से अधिक ब्याज मिलता है क्योंकि हम पैसा पहले से तय एक निश्चित समय के लिए जमा रखते हैं। नियत तारीख से पहले इसमें से हम पैसा निकाल सकते हैं परंतु उस अवस्था में ब्याज दर घट जाती है।
- **आवर्ती जमा खाता** आवधिक रूप से जैसे रोज के रोज या हर सप्ताह या हर महीने एक तय अवधि तक राशि जमा रखने के लिए होता है। इसका उपयोग हमारी नियमित बचत जमा करने के लिए किया जा सकता है।

हम बचत खाता कैसे खोलें?

हम खाता खोलने संबंधी एक फार्म भरकर तथा अपना अद्यतन फोटो और केवाइसी यानि कि अपनी पहचान और निवास के प्रमाण की जांच के लिए दस्तावेज़ प्रस्तुत करते हुए खाता खोल सकते हैं।

जब हमारे पास में कोई धन न हो तो हम खाता कैसे खोल पाएंगे?

अब खाता खोलने के लिए हमारे पास धन होने की जरूरत नहीं है। रिज़र्व बैंक ने सभी बैंकों को निर्देश दिए हैं कि वे बिना धन के बचत खाता खोलें। इसे बुनियादी बचत बैंक जमा खाता कहा जाता है जो किसी भी व्यक्ति द्वारा न्यूनतम शेष राशि की आवश्यकता के बिना खोला जा सकता है।

बुनियादी बचत बैंक खाते की विशेषताएं क्या हैं?

बुनियादी बचत बैंक जमा खाते की विशेषताएं शून्य शेष के साथ बचत बैंक खाता है। इसके अलावा बैंक कितनी भी बार पैसे जमा करने के लिए तथा एक महीने में 4 बार पैसे निकालने के लिए कोई प्रभार वसूल नहीं करेगा। हमें बिना किसी शुल्क के एक पासबुक और एक एटीएम/स्मार्ट कार्ड भी मिलेगा। हम इस खाते का उपयोग पैसे जमा करने, पैसे निकालने, पैसे भेजने, सामाजिक लाभ को सीधे जमा करवाने आदि जैसी दिन प्रतिदिन की जरूरतों के लिए कर सकते हैं।

अपने ग्राहक को जानिए (केवाइसी) के नियम क्या हैं?

केवाइसी नियमों के अनुसार बैंकों से अपेक्षित है कि वे खाता खोलने के पहले खाताधारी के ब्यौरे की जानकारी प्राप्त कर लें। इसलिए हमें बैंक को खाता खोलने के फार्म के साथ आवश्यक केवाइसी प्रलेख अर्थात् अपना एक फोटो, अपनी पहचान संबंधी प्रमाण एवं निवास का प्रमाण प्रस्तुत करने होंगे। यह खाता आधार कार्ड होने पर भी खोला जा सकता है। जिन व्यक्तियों के पास उपर्युक्त प्रलेख नहीं हैं वे मनरेगा के जॉब कार्ड पर आधारित अथवा स्व-प्रमाणन के आधार पर, उदारीकृत केवाइसी प्रक्रिया के अंतर्गत यह खाता खोल सकते हैं। उदारीकृत प्रक्रिया के अंतर्गत खोले जानेवाले ऐसे खातों को छोटे खाते के रूप में माना जाएगा और ये कुछ सीमाओं की शर्त पर होंगे।

हमारे गांव में कोई बैंक शाखा नहीं है फिर हम बैंक खाता कैसे खोलें?

अब गांव में बैंकिंग सुविधाएं प्राप्त करने के लिए कोई बैंक शाखा हो, यह जरूरी नहीं रहा है, बैंक कारोबार प्रतिनिधियों (बीसी) को नियुक्त कर रहे हैं जो गांवों में जाकर बैंक के एजेंटों के रूप में कार्य करते हैं। ये प्रतिनिधि स्थानीय व्यक्ति होते हैं जो उस स्थान से समबन्ध रखते हैं और उन्हें उस क्षेत्र में आर्थिक रुचि होती है। वे हमें अपने गांव/

आसपास के गांवों में बैंकिंग सेवाएं उपलब्ध कराएंगे। बीसी को नियुक्त करते समय बैंक अधिकारी बीसी का गांववालों से परिचय कराएंगे। हमें अपनी ग्राम पंचायत से भी बीसी के बारे में जानकारी मिल सकती है।

बीसी क्या है? बीसी अपना कार्य कैसे करते हैं ?

बैंकों को अनुमति दी गई है कि वे स्थानीय और अन्य व्यक्तियों को बैंक के एजेंट के रूप में कार्य करने के लिए बीसी के रूप में नियुक्त करें । बीसी सूचना और संप्रेषण टेक्नालॉजी (आइसीटी) आधारित यंत्रों जैसे हाथ में पकड़ने वाली मशीनें, स्मार्ट कार्ड आधारित यंत्रों, मोबाइल फोन आदि का प्रयोग कर बैंकिंग लेनदेन के कार्य संपन्न करते हैं।

बीसी आया, बीसी आया, बैंक आपके द्वार लाया

यदि हम बीसी के पास अपना पैसा जमा करें तो क्या वह सुरक्षित है?

बीसी बैंकिंग सेवाएं हमारे घर तक पहुंचाने का एक माध्यम है, क्योंकि बैंक शाखाएं हमारे गांव से लंबी दूरी पर स्थित होती हैं। बीसी के पास हमारे पैसे जमा करना किसी बैंक शाखा में पैसे जमा करने के समान ही है। ये लेनदेन आइसीटी आधारित यंत्रों के माध्यम से किए जाते हैं और इनका लेखाकरण बैंकों की बहियों में किया जाता है। ग्राहक बीसी के माध्यम से हुए लेनदेन का तुरंत सत्यापन कर पाते हैं क्योंकि बीसी के माध्यम से जमा की गई / निकाली गयी राशि की सूचना बैंक की ओर से बीसी द्वारा जारी एक रसीद द्वारा दी जाती है। इसके अलावा, बीसी के माध्यम से लेनदेन हमारे हाथ की अंगुलियों एवं अंगूठे के निशान अथवा एक पिन नंबर के आधार पर किए जाते हैं और इस प्रकार हमारे खाते में कोई दूसरा व्यक्ति ये लेनदेन नहीं कर सकता है।

बीसी के माध्यम से कौन सी सेवाएं उपलब्ध है?

बीसी से बचत जमा खातों की सुविधा, स्वत: ओवरड्राफ्ट, सावधी जमा और आवर्ती जमाराशियां, उपलब्ध होती हैं। वे हमारे खाते से धन के प्रेषण और धन की प्राप्ति की भी सुविधा दे सकते हैं। इसके अतिरिक्त, वे कृषि गतिविधियों के लिए किसान क्रेडिट कार्ड के माध्यम से आमदनी बढ़ाने वाली गतिविधियों के लिए और कृषितर आधारित गतिविधियों के लिए जनरल परपज क्रेडिट कार्ड के माध्यम से ऋण उपलब्ध करायेंगे।

ओवरड्राफ्ट क्या है और दूसरे ऋण से यह कैसे अलग है?

हमारी विविध आकस्मिक जरूरतों को पूरा करने के लिए बचत बैंक खाते में छोटे स्वत: ओवरड्राफ्ट प्रदान करते हैं। हम छोटी राशि पाने के लिए अलग से आवेदन किए बिना ही ओवरड्राफ्ट की सीमा तक पैसे निकाल सकते हैं। इस प्रकार, इससे आकस्मिकताओं के मामले में समय पर पैसे उपलब्ध हो जाने की सुविधा मिलती है। हमें ओवरड्राफ्ट की राशि पर ब्याज अदा करना होगा क्योंकि यह बैंक द्वारा दिया गया एक ऋण है। केसीसी और जीसीसी जैसे अन्य ऋण बैंकों द्वारा आमदनी निर्मित करनेवाली गतिविधियों के प्रयोजन के लिए दिए जाते हैं।

❖❖❖

उधार

आमदनी और ऋण (क्रेडिट) में क्या अंतर है?

हर ऋण अथवा कर्ज चुकाना होता है। इसे कमाए हुए पैसे अथवा आमदनी के रूप में नहीं माना जाना चाहिए। जब हम वेतन या मजदूरी आदि से पैसा कमाते हैं तो वह हमारी आमदनी है जबकि ऋण हमारी आमदनी नहीं है। बल्कि, ऋण की किश्तों की चुकौती खर्च में गिनी जाएगी।

हम कब उधार लेते हैं?

हम अपनी आमदनी से खर्चे अधिक हो जाने की स्थिति में अथवा कुछ आकस्मिक जरूरतें आ जाने पर पैसा उधार लेते हैं। कोई कारोबारी गतिविधि करने के लिए पैसों की जरूरत होने पर भी हम उधार लेते हैं।

क्या आपको जब कभी भी पैसे की कमी हो तो उधार लेना चाहिए?

कोई समारोह करने, ताम-झाम से शादी कराने, आभूषण खरीदने अथवा महंगी उपभोक्ता वस्तुएं खरीदने के लिए होने वाले खर्चों को पूरा करने के लिए हम उधार न लें। यदि इन मदों पर हमें खर्चा करना ही है तो अपनी वर्तमान आमदनी या संचित बचत में से यह खर्चा करें। उपभोक्ता खर्चों के लिए अपनी वर्तमान आमदनी अथवा जमा की गई बचत को उपयोग में लाएं। यदि परिस्थितिवश हमें उपभोग के लिए उधार लेना पड़े तो पहले इस बात को देखें कि हम अपनी वर्तमान आमदनी में से कितनी राशि की चुकौती कर पायेंगे। उपभोक्ता खर्चों पर कोई आमदनी नहीं होती है तो हम ऋण की चुकौती कैसे करेंगे? दूसरी ओर, हम पहले के ऋण चुकाने के लिए बार-बार उधार लेते रहेंगे और ऋण जाल में फसते जाएंगे।

सोच समझकर लेना कर्ज, वरना बन जाएगा मर्ज

क्यों केवल आमदनी बढ़ाने वाली गतिविधियों के लिए ही उधार लेना उचित है?

एक बात ध्यान में रखी जाए कि जब हम ऋण लेते हैं तो उसे ब्याज सहित चुकाना भी होता है। इसलिए उधार लेते समय हमेशा अपनी चुकाने की क्षमता का अंदाजा कर लेना चाहिए। जब किसी कारोबारी गतिविधि करने के लिए हम उधार लेते हैं तब उससे हमारी आमदनी बढ़ती जाएगी, ऐसे में हम अर्जित आय में से ऋण को चुका सकेंगे। उदाहरण के लिए किसी बैंक से जब हम बीज खरीदने के लिए ₹1000 उधार लेते हैं जिससे हम फसल उगा सकेंगे और वह ₹10,000 में बेच सकेंगे तो ऐसे में हम ₹ 1000 + ब्याज के रूप में ₹100 अर्थात् बैंक को ₹ 1100 चुका सकेंगे और शेष बचे ₹ 8,900 हमारी अतिरिक्त आमदनी हो जाएगी। हमें ऐसी गतिविधि के लिए उधार लेना चाहिए जिससे देय ब्याज की राशि से अधिक आमदनी होती हो अन्यथा पहले लिए गए उधार को चुकाने के लिए फिर से उधार लेना पड़ेगा।

व्यवसाय लगाने को लेना कर्ज, बढ़ेगी आमदनी, पूरे होंगे फ़र्ज

अपनी सीमा के भीतर ही क्यों उधार लेना चाहिए?

लिया गया कोई भी ऋण ब्याज सहित चुकाना होता है। यह निश्चित कर लें कि हमऋण चुकाने योग्य आमदनी प्राप्त कर रहे हैं। इसकी जांच करने का आसान तरीका है कि हर महीने अपनी आमदनी, खर्चें और बचत राशि का जायज़ा लें। बचत राशि ऋण चुकौती की हमारी मासिक किश्त से ज्यादा होनी चाहिए।

❖❖❖

बैंकों से उधार

हम बैंक से कर्ज क्यों लें जब कि गांव में अनौपचारिक स्रोत आसानी से उपलब्ध हैं?

साहूकारों और अन्य अनौपचारिक स्रोतों की तुलना में बैंक ऋण का एक बेहतर स्रोत है,यद्यपि कई बार उधार मिलने में कुछ समय लग सकता है। यह एक सुरक्षित, विश्वसनीय, पारदर्शी संस्था है जो आपको उचित शर्तों पर उधार देकर मदद कर सकता है। बैंक भारतीय रिज़र्व बैंक द्वारा नियमित किए जाते हैं। अच्छी बात यह है कि बैंक अनौपचारिक स्रोतों यथा रिश्तेदारों, मित्रों, साहूकारों, विशी, मुखिया आदि की तुलना में कम ब्याज लेते हैं। इसके अलावा, बैंक ऋण राशि संवितरित करने से पूर्व ऋण संबंधी सभी कागज़ात तैयार करते हैं। विवाद के मामलों में शिकायत निवारण तंत्र भी उपलब्ध होता है।

बैंक से अगर लिया है कर्ज, कम है ब्याज, और हिसाब है ज़ायज

बैंकों का शिकायत निवारण तंत्र क्या है?

बैंक एक नियमित संस्था हैं। प्रत्येक बैंक में एक शिकायत निवारण अधिकारी होता है जिसका ब्योरा सभी शाखाओं तथा उनके वेबसाइट में प्रकाशित किया जाता है। यदि

कोई विवाद हो तो हम अपनी शिकायत उस बैंक के शिकायत निवारण अधिकारी के पास फाइल कर सकते हैं। यदि किसी विवाद पर उनके समाधान से हम संतुष्ट नहीं है तो हम अपनी शिकायत भारतीय रिज़र्व बैंक के बैंकिंग लोकपाल के पास भी कर सकते हैं।

क्या अनौपचारिक स्रोतों के मामलों में भी ऐसा शिकायत निवारण तंत्र उपलब्ध है?

अनौपचारिक स्रोतों के मामलों में कोई शिकायत निवारण तंत्र नहीं है क्योंकि वे नियमित संस्था नहीं है। इसी कारण से उनकी शर्तों में तथा लेनदेनों के रिकार्ड में भी पारदर्शिता का अभाव होता है।

कर्ज देने में साहूकारों की तुलना में बैंक कभी-कभी ज्यादा समय क्यों लेते हैं?

बैंक जनता से जमाराशियां एकत्रित करके जमाकर्ताओं की यह राशि जरूरतमंद लोगों को ऋण के रूप में देते हैं। जमाकर्ताओं की राशि सुरक्षित रखने हेतु उनसे यह अपेक्षित है कि वे उधारकर्ता द्वारा इस राशि का उचित उपयोग सुनिश्चित करें। अतः बैंक ऋण मंजूर करने से पूर्व ऋण प्रस्तावों की विस्तृत छानबीन करता है। भले ही अधिक समय लगता हो लेकिन उधारकर्ताओं के लिए यह लाभकारी है क्योंकि सब कुछ अभिलेखित होता है अतः उन्हें धोखा नहीं दिया जा सकता। यह वास्तव में जमाकर्ताओं और उधारकर्ताओं के भी हित में है।

बैंकों द्वारा कितने प्रकार के कर्ज दिए जाते हैं?

बैंक विभिन्न प्रयोजनों जैसे आवास, शिक्षा, कृषि और उससे संबद्ध कार्यकलाप, कारोबारी उद्यम शुरूकरने, उपभोक्ता ऋण आदि के लिए ऋण देते हैं अर्थात बैंक सभी प्रकार की ऋण आवश्यकताओं को पूरा करते हैं।

बैंक एक, जरूरते अनेक, फिर भी पूरी हो हर एक

हम बैंक से कैसे कर्ज प्राप्त कर सकते हैं?

हमें अपनी आवश्यकता दर्शाते हुए बैंक को एक ऋण आवेदन प्रस्तुत करना होगा। बैंक ब्योरे को सत्यापित करेगा, हमारी चुकौती क्षमता का मूल्यांकन करेगा और उसके बाद ऋण मंजूर करेगा जो हमें बैंक द्वारा निर्धारित किश्तों में ब्याज सहित चुकाना पड़ेगा।

बैंकों से उधार लेने की लागत क्या होगी?

उधार ली गई राशि पर लगाया ब्याज, उधार लेने की लागत है। हम अपने ऋण पर दे रहे ब्याज की लागत को समझे। बैंक सामान्यतः प्रत्येक वर्ष के लिए ब्याज दर अधिसूचित करता है अर्थात् 12 प्रतिशत के वार्षिक ब्याज का अर्थ है प्रति माह 1 प्रतिशत का ब्याज। किसी ऋण की कीमत में चक्रवृद्धि की बारंबारता भी महत्वपूर्ण है। दूसरे अनौपचारिक स्रोतों, जो हमें उधार की सही लागत नहीं बताते हैं, से भिन्न बैंकों द्वारा विभिन्न प्रयोजनो के लिए ली जानेवाली ब्याज दर और लगाए जानेवाले अन्य प्रभार जनता के लिए प्रदर्शित किए जाते हैं और सभी एकसमान ग्राहकों/ प्रयोजनों के लिए ये एकसमान होते हैं। बैंक कितना प्रभार लगाते हैं इसकी सार्वजनिक रूप से घोषणा करते हैं।

कर्जा लेने के लिए क्या हमें कोई गारंटी देनी पड़ेगी?

यह हम जिस प्रकार का कर्जा लेते हैं, उस पर निर्भर है। आमतौर पर छोटे कर्ज के लिए कोई गारंटी की आवश्यकता नहीं है। परंतु बड़ी राशियों के लिए हमें कुछ गारंटी देनी पड़ेगी। गारंटी ऐसी कोई आस्ति जो हम बैंक के कर्जे से निर्मित करेंगे अथवा भूमि, मकान आदि जैसी दूसरी संपार्श्विक प्रतिभूतियों के रूप में हो सकती है जो कर्जे के प्रकार पर निर्भर रहेगी।

कर्ज की चुकौती क्यों की जानी चाहिए?

बैंक उधार देने के लिए जमाकर्ताओं के पैसे का उपयोग करते हैं। यदि हम ऋण नहीं चुकाएंगे तो बैंकों की वित्तीय स्थिति कमजोर हो जाएंगी। इससे बैंक की जमाकर्ताओं के पैसे समय पर वापस देने की क्षमता प्रभावित हो जाएगी। यदि सभी बैंक उधारकर्ता ऐसा करेंगे तो ऐसी परिस्थिति में हमारे और हमारे रिश्तेदारों द्वारा बैंक में जमा किया गया पैसा जोखिमपूर्ण हो जाएगा। साथ ही, बैंक को हमारे द्वारा चुकाए जानेवाले पैसे की दूसरे

किसी व्यक्ति को उधार देने के लिए जरूरत होती है। इसके अलावा, यदि हम चुकौती करेंगे तब ही भविष्य में भी हमें कर्ज मंजूर किए जाएंगे।

बैंक से लिया गया कर्जा यदि हम न चुकाएं तो क्या होगा?

ऋण न चुकाए जाने की स्थिति में कर्ज के संबंध में हमारी गारंटी के रूप में रखी जमानत पर कब्जा कर लेने का अधिकार बैंक को होगा और वह हमारे विरूद्ध ब्याज सहित ऋण राशि वसूल करने के लिए कानूनी कार्रवाई शुरूकर सकता है ।

❖❖❖

टिप्पणियां

टिप्पणियां

टिप्पणियां

भारतीय रिज़र्व बैंक

अस्वीकरण

आम लोगों की मौलिक जानकारी तथा दिशानिर्देश हेतु भारतीय रिजर्व बैंक द्वारा वित्तीय शिक्षा के लिए यह प्रयास किया गया है। इस प्रकाशन में स्पष्ट की गई बैंकिंग अवधारणाएं लोगों को समझने में आसानी हो इस दृष्टि से हैं और न कि ये कोई विधिक अथवा तकनीकी स्पष्टीकरण हैं। पाठकों से अनुरोध है कि वे इस डायरी को पढ़कर इसका उपयोग स्वविवेक से करें। इस प्रकाशन में किसी प्रकार की चूक न रहें इसकी पूरी कोशिश की गई है। इस पर भी, यदि कोई चूक, भूल अथवा असंगति पायी जाए तो कृपया प्रकाशन में दिए गए पते पर हमें वह सूचित की जाए जिसे अगले संस्करण में सुधारा जाएगा। यह अधिसूचित किया जाता है कि यदि किसी को इस सामग्री के प्रयोग करने से किसी भी स्वरूप में या किसी भी प्रकार से कोई क्षति या हानि होती है तो प्रकाशक उसके लिए जिम्मेदार नहीं है।

बैंक से नाता जोड़ो, गरीबी को पीछे छोड़ो

NABARD

NATIONAL BANK FOR AGRICULTURE
AND RURAL DEVELOPMENT

भारतीय रिज़र्व बैंक

ग्रामीण आयोजना और ऋण विभाग,
केन्द्रीय कार्यालय, मुंबई